



१ ई आर्यकुमाराय नमः सर्व
 वृष्टिर्कांमम ॐ कुरु कुरु
 लकुयः माहयः
 वन्दयः हं रुद्र स्वर
 ॐ व महा एव जाय
 ॐ व सिद्धि वत्त
 ५ आ व म कु या नां ॥
 वरुणागिनिः वरुणा ता हि आर्यता
 ता वा म कु ॥

म



ॐ नमो गवत म शे आ कृ मा न र ता
 १ य वाधि स व य म स स हा य म हा
 १ का र्त्तु नि जाय ॥ न य था ॥ ॐ अ न
 १ र्य वि न र्जः शु क वि शु क उ म क नि
 १ वि उ म ध निः उ म ले वि म ले ॥ ज
 १ य वा हि नि रु रु य त हं हं हं रु रु
 १ रु रु रु रु स्था हा ॥ य १ रु मा धि
 १ र नी धि ग य रु वा य य रुः स
 १ मृ का ग य रु ॥ स म धि वि नि रु
 १ स ता रु व निः रु रु शु ग म रु
 १ प रि रु द्रा निः रु क वा लं ड चालि
 १ मा शु रु क ल्य का नि स वि ॥ रु

पिःसर्वपापत्रयंगकुतिः॥७॥
१ नक्रायेनमहापल्लिगतवनि
१ दितियत्रक्रायेनविद्याधना
१ समाहवनिःतृणियत्रक्राये
१ नमःश्रीगुरुवन्द्यभिःप्रक्षयनक
१ र्यकात्रिलम्पिसिद्धिह्यागुक्
१ हविष्यनिःश्रायसंश्रिताह
१ त्रकस्यपुनिसनामधननीस
१ पाकः॥

१ उंमलिधनिवजिनिमहाप
१ गिसत्रत्रक्रायेनहंरुहृत्वाहा॥

१ उंमृगबलेवलविभुहंरुहृ
१ रुहृत्वाहा॥

१ उंविमलेविपूत्रयवलजय
१ वाहनीमृगवित्रहंरुहृ
१ रुहृत्वाहा॥

१ उंमृगविलाकिगर्हसंत्रक्रा
१ श्राकर्वनीहंरुहृत्वाहा॥
१ स्वाहा॥

१ उंरतरतरसक्रुतसक्रुत
१ विष्णुयन
१ विष्णुयनीहंरुहृत्वाहा॥

१ उं नमः श्रीमदायितागो यन्मः॥
 २ गुमत्यागत्र केन न्य नानाधु
 १ विनाजिग॥ ना ना दुमत्रगकि रु
 १ नाना पंक्तिनिकृतिग॥ नानानि
 १ तदे कात्रे नाना मृग समा कृतेः ना
 १ ना कृत्स्न जाति हि संमगां दधि वा
 १ सिग॥ नाना हय रुता यन वद्यु जी
 १ न निखली कि नु ले मधू ता बां ही
 १ गिः मनुवा तलं संकुलः सिद्धि विद्या
 १ धत्र गले मध्वं ज्वनि नादिनः
 १ मुनि हि कीत गा ले ज्वः सततं सुनि
 १ ए विगः वाधि सतत गले ज्व ज्ये
 १ ~~ममं सुनि ज्व विग~~

॥ ५॥

१ दज हर मि ज्व ले त पिः आर्यना
 १ नादि लि द्वे वे वि या ना उ स ह सु
 १ केः को रु ता उ ग ले ज्व न्य ह य
 १ गु वादि लि वृगः सर्व सख दि गा
 १ यु का ले ग वा न व लो कि गः वि र
 १ हा न त रु ग मां प म ग ले स न कि
 १ गः मह ग न व सा यु का से त्या व
 १ कृ ग या वि गः धर्म दि द ग न त्या
 १ क म ह लां द व प र्ष दिः न गु व
 १ वि रु मा ग स व रु वा लि म ला व
 १ लेः प न म कृ प या यु कः प्र वृ क
 १ ए व लो कि गः न रु ता न ग तिं ता
 १ नि ग रु वा घृ नृ सं क टः सि र न्य

मिमुच्यसत्वाष्टमयाः संसातगतवं
 १। साः संसातके पाहो गगनवर्गमा
 १। मयेः मृचक सर्वसत्वास्तु क्व हि
 १। मलाभनेः ७ वं मृकं जगत्त्रापैसंग्र
 १। मानवलोकि तः उवाच मधुगावाः
 १। निवर्जवालिपुष्पाधिना ७ शुगुष्ठ
 १। कृतां नृजं जमिता रसतयनः पुनि
 १। धनं वल्लभस्य त्राममाहा लोका
 १। मागत्र ८ साहा कर्म्म नृथा यता
 १। जगत् इक्ष्वाकु उदितादिपुसं का ७
 १। पुष्टं इव दनपुलाः तस्य यकिः
 १। ७ सांसातादवा स्रतमान्वा न
 १। कम्पयन्कि ७ या लोका कुशवे

नयजगत्तुसा नः जीलोत्पत्ता
 के तादवा माहे म्मिहे त्रिकुव
 १। ७ जगत्संरुत्तु लभ धिया ७ हं मृ
 १। ह्यादिता त्रिभैः काकात्र जम्भुसं
 १। पातनाः जाना रयसमा कृते ॥
 १। स्मृतम्भदवनामानि सत्वा नत्र
 १। त्राम्यहंसदा गत्र यिष्याम्यहं
 १। नाथं जाना रयमहा र्धवा ॥
 १। गनता त्रिमां लोकं गयकिं मृ
 १। निपुगवाः कृता जालिपुटा रत्ना
 १। गगसाध्यं सादतातः ७ त्रिभि
 १। र्जगत्त्रिगुणैर्दवचनं मववी
 १। ७ः जासाद जगत्तं कृत्स्नता कृ

१। किं न कथं दण्डरसि ज्वरे नाथे वाधिस
१। त्वमहधिक्षेः सर्वपापहन्तं पूषः मागत्य
१। कृत्स्निवर्धनः अयनागापकननं ससु
१। वसुसुखावहं। गेहि आस्थापकं च
१। वसुसुखविर्वर्धनमंतिनालं वासुसु
१। नो गत्की कथमहाभूतः उवं मुके धर
१। गवानुपुहसत्रवलोकिगः बवलो
१। कदिगः सुर्वानुमेयासु गमयाद्
१। गमदतिगकत्रमुक्कं न्यपुन्यलं क
१। लसल्लिगः गमुवाचमहाप्राक साध
१। साधुमहागप॥ नामाकुं सुमहासा
१। गसर्वसुखे कवत्सलः मानि संकिं
१। मनुजाः सम्यक् सुखं ये स्वताः सर्व
१। व्याधि विनिमुका सर्वं चर्य गुण

मिताः अकालमृत्फुनिदग्धज्व
तायमिस्सुखावतिः नामहंसं प्रव
तामिदवसंधाः गुणमथम्यः अमु
मादत्तमथमधर्मरविद्यधंसुनि
स्ववृता ॥ • ॥ शांतावन्पुलोच
नगात्रगाता तव्य सर्वसत्यानुवपिनि
सर्वसत्यनामिनिः सहमुदकं सहसु
नेगुः कं नमो तगवतं अवलो कय २
मां सर्वसत्यानां च हं रुद स्वाहा ॥
उतात्रगुतात्रगुत्र स्वाहाः उतिष्ठ सु
तिष्ठ शुद्धविशुद्धसुगतामरुमे
गीहृदयनिर्मलं गमस्यामत्रपि
महाप्राकपुवत्रयितुवितः अवता
कितमहाप्रीतिविज्वत्रपिमहाव

१ लोः ॐ कल्याणि महागजा लोकध
१ प्रिमहायसाः सत्रसग वि अलो
१ क्रि प्रहा गु वृद्धि वृद्धि निः धृति दा
१ पुस्ति दा स्वाहा ॥ ॥ ॐ का ना का
१ मत्रु वि ना सर्व स त्रि ना यू का संग
१ मा गत्र ली कथा पु ह्य वा न मि ता द
१ यी आ र्य ना त म ना त मां : इन्द्र रि
१ अं वि नि यु स्म वि धा त रि प्रियं व
१ दाः च द्या न ना महा लो रि अ जि ता
१ पि न वा स साः महा मा या महा उव
१ त म हा य ले य ता कु मीः महा त्री दि
१ महा वन्दि इ क स त्र नि स्र न्य नि ॥
१ पु स्ता का अ न्क रू पा यः वि क था य का
१ लें न प्र हाः वि शु मा नि अ जि ख प्री

१ व की या पि यु ता यू धः इ म्फ नि
१ रु म्फ नि का ली का ल ना गी नी ज
१ व तीः त रु ली मा हि नी ज म ना ।
१ का ना दा वि गी गु लाः प्र म्फ नि व
१ द मा ना व गु स्ता व गु ह्य वा सि नीः
१ मां ग ल्या अं क लि हा स्ता ना त व दा
१ म नी रु वाः का पा त्रि ली क महा ला
१ गा सं ध्या स ग्गा व ता जि ता हा थ
१ वा रु कृ पा दृ ष्टि न क मार्ग पु द र्ग
१ वि व त्र दा सा अ नि ज म नि स्त्री त्र
१ पा मि त वि कु माः अ व त्रि था ग्नी सि
१ आ व ल्ता ली अ मृ ता ध्र वा ध न्या
१ पु स्ता महा ला गा सु हा गा प्रिय द

१ जिनीः कुगांगराहनीलीमाउगाउ
१ गुमतागवाः ३ गदिकदिगीयुकास
१ गं न्याएकिवत्सनावागिअत्रिजि
१ वाअस्त्रानिणासर्वगसानगासुर्वा
१ धीसाधनीएडागाफिअपिधन
१ ददाः अएयागोमिपूष्माः श्रीम
१ लोकेअतोमक्रोमितामामगुः
१ लभनगसर्वसापत्रिपुत्रिलीः उतात्र
१ कृपावलनिष्कअवत्रलिस्वाहाः
१ नामाहालुनेअगकंतकीमिगह
१ तडगमं १ तहस्यमएगगुहंदवा
१ नामपिइल्लं १ सलग्गकईसर्व
१ किविषनासनं १ सर्वयाधिपुमम
१ नंसर्वसहस्रस्वावहं १ ठिकालय

१ पृथ्वीमां करिस्त्रायसमाहि
१ १५ः सावित्रमवकांलेनरायजि
१ यमवापूयाग ॥ ३४ स्त्रितस्यसूत्रि
१ निष्पंदलिक्षधनवानुएवे ॥ ३
१ गकैवेस्त्रहाग्राहीमअवीचनस
१ यः वधनामूयगवकीयवहात्र
१ ३३ जोएवतमहाग्राहमअनीच
१ नंशुयः वधनामूयगवकीय
१ वहाले ३ जोएवत १ गगुवीमेगया
किदिनअपिदुष्टिनसंगामसं
१ कनइलनानाएयसमृक्तिग
१ स्त्रिलभदेवनामानिसर्वहियाअ
१ पाहमिः नाकालमृकैएवंगिग्रा
१ प्राणिविपुलंमिर्वः मानूषसह

१ तं ज म्मि त्क स्य म हात्म नं ॥ यस्मि दे
१ प्रा न रु का य मा न व ॥ की र्त्तु पि व्य मि ॥
१ स दि र्घ का ल मा यु सा वि यो व ले र
१ ग न त ॥ द वा ना गा रु ध य रु ग न्ध
१ की क ट पु ग ना ॥ पि ज्म वा ना रु सि र
१ मा ग ना रौ ड ग रु सा ॥ अ कि न्या स्ना न
१ का पु ग ॥ रु डो लो न्या म हा ग हा ॥
१ कु या प त स्ना त का र्थे व रु ग का
१ की द का द य ॥ व ना अ जि च वू का पु
१ ध्या य वा न्य इ व र त सा ॥ कु या म
१ पि न सं व कि किं पु न ग स्य वि गृ हं ॥
१ इ व स त्या न वा ध क था ध था ना म
१ क म ति ज्म स र्व ज्म र्थ ग ल्म यू का
१ पु ग प्रो ग्ने ज्म व रु ग ॥ अ गि स्म ना र

१ व द्दी मां कृ ति नं पि य द र्ज नं ॥
१ पि मि मां वा नि त र्व ता रु वि ज्म ल
१ द ॥ क ल्या ल मि ग सं स्य वा वा चि
१ स त्प वि र वि ग ॥ स दा वि त रि ता
१ वू डे य ग य ता स्य पु य ग ॥ रु गि
१ अ म दा गी आ र्थ ता ना म धे न
१ नि र दू त रि का या ना मा रु त र स
१ ग कं वू डे ल वि तं प रि स मा क ॥
१ उ व लु म हा ना व न र्द र द स्या हा ॥
१ स्वा यु व सि पु ॥ ल ड रु ॥ सिं ग सि ॥
१ त्व व त ॥ अ ग दा त रि स्यं रु य ॥
१ ग डी रु क् ॥ आ दि नं म इ त्व रु ल ॥

१ॐ नमः श्री चन्द्र महाशिवाय नमः॥
१ श्रीमत्पुष्पकविनायक सर्वसत्त्वपदा
१ त्रिलिः नमो विद्यापसंस्तुतां कायति
१ यकम्कयं कर्तुं देवस्य कृपया सर्व
१ नोपायलावयने॥ कामपुर्ण जल
१ यनगर्जनिजकपाजने॥ सफवा
१ गत्रपाताकुसुमवासायदजिन्म॥
१ जकृष्णकृष्णपात्रात्कृत्वा नमः॥
१ सर्वदुर्जिनैरमोक्तैः कृत्वा
१ कविनैः वासनाय॥ मात्रपु
१ हातसंस्तुत सर्वपादाय नमः॥
१ मन्त्रेणैव कृत्वा च त्रिमिदं माहात्म्यं
१ कात्रादयः॥ पुष्पायः विना

१ गतास्तु न वनेत्येकं समुद्धीयितं
१ कृत्वा चन्द्रसमायमायपुत्रवः॥
१ श्रीवत्सलस्ययं॥ सायनत्वेनैव
१ साधनाय त्रिगणित्यकपुलाति
१ कृति॥ त्रिगुणमंत्रगाथा॥ विष्णुमन्त्रा
१ रुदिनैः समस्तलगतं कानवी
१ यादुवंदुष्टादिः पत्रपीणित्तु
१ त्रिमलयागाहं सपताः॥ उर्ध्व
१ मासायिताजितदक्षिणैः कत्रपा
१ जकृष्णकृष्णपात्रात्कृत्वा नमः॥
१ चन्द्रमहालाबलकोटमुदाहृतदा॥
१ ॐ नमः श्री चन्द्र महाशिवाय नमः॥
१ उर्ध्वकोटौ चन्द्रवृत्तवद्वरप्रवरक

ॐ स्वस्त्यस्तु ॥
ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ हं ३ पं ३ मथ ३ कल ३ काल य ३
 १. अथ य ३ माल य ३ इ व लु म हा ना
 १ व ल हं ३ ५ ॥ इ विलि ३ मिलि ३ ललि
 १ ग हं ३ ५ ॥ इ व ३ का रु हा की हं ३ ५
 १ ३ ॥ ॥ अथ १० ८ ॥
 अथ म ३ रु का या ना मृ द य या य
 १ वलि वि यं ३ ५ ॥ न का वि यं ३ ५
 अथ सर्व लि य ना म ॥ अथ ॥ र ग ॥ पु न ॥
 पि अ व ॥ सर्व लि य ना म ॥ वा अ
 दो र व ॥ वा कि ली ॥ अं कि ली ॥ दा र
 ना अ ॥ नी ज्व व र व ॥ स प वा दि ॥

१ धर्मगोत्रायान्तरहरे रगवमि ।
 १ हरे रगवमि हरे हरे हरे हरे हरे
 १ पचपच मथमथ मथ २ ५ नर
 १ वि ५ नर सर्वविद्युविनायकानां सर्व
 १ सत्त्व १ सर्वइष्टानं सर्वशुद्धानं रुत
 १ यस्तो गयः १ ५ निः विध्वंसयः सर्व
 १ सत्त्व नृगगुहृष्ट रूपा मूर्त्तिवि उका
 १ अलिनिः १ लोका क मथ निरु २ मां च
 १ १ २ चिलि २ वृत्त २ कल २ किलि २ क
 १ १ २ मूर्च २ ५ सुहासः १ नमयगुणय
 १ वृद्ध सत्य धर्म संघ सत्यः सत्य वादि नि
 १ वृद्धः धर्मः संघः सत्य न मातिक म सत्य
 १ वादि नि सत्यः मातिक मः तन्यादलिक
 १ १ २ कर्त्तव्य २ ५ २ ५ मानयः विपु

मानयः वन्द्य सूर्यमानयः १ लोका
 दिपतिमानयः सर्वकृता कृता १ क
 काडमहात्रगादिमानयः मातृ २
 न जाययः वृत्तः १ पृथु माती नीः १ लं २
 १ न २ १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 दनं कलिः १ ललललः १ हिलि २ १ २ १ २
 ह २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 किलि १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 पित्वा हा ॥ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 पित्वा हा ॥ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 १ सर्वशुद्धानं नवकृष्ट १ १ १ १ १ १ १ १
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

ॐ नमः श्रीगुरुकाय ॥ श्रीधर्मपिंडन
॥ गो व नायः सहस्रगजसः चतुर्द
॥ नरप्रह्वनरप्रिभूतवग्रहसेष्यग
॥ नरप्रसतसहस्ररद्वरद्वकावय
॥ गगयः मातयः सर्वद्वसत्काना
॥ नागानां नागगजानां स्यान्नाम
॥ स्वकिंलयः गलंगलनागयः
॥ गुल्मांगुल्मनागयः पद्मान
॥ नागयः प्रिहमांगयः पद्म
॥ सात्रिनां पद्माननागयः प्र
॥ सर्वनागनागयः काहिकं
॥ वाहिकं वाहिकं वतुधहिकं
॥ मासिकं मासिकं मासिकं मास्य
॥ हलिकं प्रवं सर्वनागनागयः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं
हूं हूं हूं श्री नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ श्री
ॐ वं हूं ॥ - ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सुखं सान्धं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
नित्यं ॥ सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
वा सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
वासुदेवाय नमः ॥ नमो नमो
नित्यं ॥ सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
ठि लि गी र्ग ला वः सा यं नृणां दि
नाथं ॥ नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो ॥

नमो नृप नाथाय ॥ १ ॥
 बुद्धा गले च त्रीहृदि ज्वरमु
 रूजो वीर्यं च प्राणान् तथा
 वैजं ह्यजं जिह्वां च प्राणं च
 निधं प्राणिं ह्यननां ह्यननां च
 जं दीर्घं च मृदं गं वा दं न त्रि
 गां गो गाय त्रं च त्रुः स्पर्शनं
 त्यक्तं तस्य ह्यवकाशं नितं नाथं
 नमः सर्वदा ॥

[illegible]

उ वि व म दि ह स के व ज्ञा जि कु न रि शु
 तं दि ज तु य पा कु मे प त तु क रि
 वा नं क रि शु ल रि रि न न्द म गं लं च
 क म र्द रि त्री का ग ज रि लि पा त के
 जं त्व का हा न के द लि का म पू पि ह
 का ग यः का क य ज कु वि का त ज रि
 क तु उ व व ग ॥ तं तु का द र्प ल वि ल
 ग रु वा सि रु रु स ज क रा रु नि ग दं व
 ह ती उ उ ज न का लि का क व च ली जी
 गै तं क हे न व तु त्र य उ क मा ग ॥ वा
 म य ल ह ह द क म् म लं वा न के वाः
 त के च नू व दं ग वृ ल के तु पि द नि ग
 र्ज नी ल धा पू पू ल मा ला ज ग व रा नि रा

गानाधुत्रिका॥ लोके दुःका दुःवर्म
केलवमके वगालिका आदना वि
निका ह्ये मगुरुली न ह केः के
काले कालिका निक मकुवर्क सु
मवर्किकः अनिज्वर कीत्रक च
वाक्यवृत्तक पूगकः शुचिपुका च व
लक मयवृत्ता क जलधः नव
क्रमगोविन्द यादासफिरा न ह का
पंच मुद्रा कृता एतदां च नाजपंगत
धुः सग मुद्रा मालिका ये क न पुत्र
नामत्रय या पुत्रवर्मा विव स नात्रा
मावली च ग्राममा ॥ न स्या गगु म ह
देवी वज्रवा ता ही गा ह धमः हि उ जा

सर्वकर्षि ववामक पात्र के धात्रा व ऊ
घट्ट लो एत व लो लिग्य सहा नागा न
नामित्री उकवक मुक के धम च न मा
एतक व धि केः मृगु मा ला जि नागु
वा धमं गात्र धमर्क नाजिल सि कपाल
चः दिवा गन्धामुला गिलि नाः पुत्रक
पूतादि बुद्धि व ज म्ना म ह विधी ॥ व
वा ला एत एत पूः न ला एत एत पि न ग
जो व लयादि ल म या दि ल म यदि कि
म हा ग ऊ य न म उच ती ॥ पु ह्ना पा य ह
र्या द अ सर्व सन्धि व विग्रहाः हेतूक
क ले उच वि स्मृ त के विरा व यगः नव
न पं तु म हा व ज हेतूकं कु विरा व यगः

सर्वसत्तासंज्ञायुक्तं: मातृसिद्धिं
 च ददति म: गता काय वा क म नु:
 उं आ ४ का य वा क सि रु व उं ह
 रु ६॥ उं व उ वा ता ही महा दे वी हं
 रु ६॥ मृत म नु ॥ उं आ व उ ह हं
 र र क हं आ कि नी जा ल स म्ब
 नं स्था हा ॥ उं उं उं सर्व वृद्ध आ कि
 नी व उ व नी य नी य हं हं हं रु ६
 रु ६ रु ६ स्था हा ॥ रु मि आ महा स
 म न ह द य स मा फ ॥ पू ग ह द य व
 म पा मा रु मं: च न उ न रु म सं का
 न रु म आ कि ल रु ३ ॥

उं न मा रु ग व रु ल्प र्थ व र्ज व ता हि ।
 या ४ आ रु म व मि वि या . महा वि र्था गु
 म यु रु महा गु के उ व ती द की: म हा ला
 या म हं उ व ती रु ल क रु ह न य व र्ता गु
 लो के रु ज ग व न रु के का म म यी
 मा . महा मा य मि वि रु ता: गु लो के ४
 आ स नी वि या: पु व य र्थ म हं उ व ती: य
 षां वि हा ग मा रु या: वि या या सा ध के उ व
 ती: स द व ग रु व ग लं: स व जा स र म
 नू षा: वि या ध र पि सा या ना: ना रु सो न ह
 कि न ना न: व स मा न य मि ल ग नि: रु ल
 जो रु न जो नि च ॥ मा हं उ व र्थ क ती वि या
 रु ३ रु जाल क लि रु थ . मा हि नी रु रु
 नी उ व र्थ वि च षा या ठ ना दि कं: व रु थ

कर्वणकं ऊं तं आ न क वि ध कु उ ह
तानः पठि ना कू रू ग वि ध्याः वा चा सि
हि ये सा ध नः न ऊ ध दु गं त स्या नो
पु वा सा वि चि य गः नृ कुं जा गो र वः
सि धिः द वी स ए व द म्य हं म नुं ग व
म हा मा याः स र्व उ त्ता क सा ध नः पु
व डा मि म हा या गीः दि य त्र कु च वं
कि रिः ॥ ग य थं ॥ उं न मा र ग व लीः
व ऊ वा ता हीः आ र्य प त्रा जि ग र्ते ला क
मा ग तः मा हा वि यः स र्व ए ग त या व ह
म हा व र्ज व जा स नः नृ प त्रा जि गः व न
क त्रि न पु डा म त्रिः वि ष अ ष लिः
ग ष नि कु र नि वि ष क त्रा त्रि ली स
लीः मा त्र लि स पु री द नि प त्रा वि ऊ य
ऊं य

नृ मु नि रु मु नि मा ह मि व ऊ वा ता
हि मु हा या गी जी वा म ग य गी र व र्ज
ग त्री ॥ ग य थं ॥ पा ग र ह न र प्रा ष
नृ कि कि नि ॥ सिं वि नीः धू न र व ऊ ह स
ए व व र व द्यो ग क या त्र अ त्रि नि म हा
वि जि ग मां स सा नि ग मा नू षा नः प्रा वृ ग
सा र्ज न त गी न मा रा गु रि ग अ त्रि नी
सं मु नि सं र ह न र प्रा ष नः स र्व पा प
स सा नांः स र्व प र्ज नां मां स कुं द निः क्री
ध निः क्री ध मू र्ज ड म्हा क त्रा त्रि नि म
हा मू डाः आ ह नृ क द व स्या गु म हि वी
स ह म गि त्रः स ह मु वा ह वः ग ग स ह आ
नृ नृ कृ ति ग ग रू सः आ ता मृ शि पिं ग
ल गी व न व र्ज ग त्रि त्रः व र्ज स नि मि लि

मिमिलिरहंरहंरखरधूरधूररमूरर
जुद्धेगमहायाजिलीपठिगसिद्धिउं
उंउंउंउंउंहंहंलीमःहसरवीनःहाहा
हाहाहंहंउंलीकविनासिनिःगगस
हमुकाठिगधगगपत्रिकात्रिगहंरु
सिहृयःस्वगजत्रयगगुलाकादने
महासमुद्रलोषनःगसरहंरुद्वी
गोद्विगहंरहंरमहापञ्चनांमाहनी
यागगत्रिहंःजकिनीःलोकांनां
वदनिसयःपुण्यकात्रिलीहंरुः
सगगसलिमहावीनःपत्रमसिद्धिगु
मज्जीयहंरुद्वीरस्वाहा॥ ० ॥
पुष्पाक्षधनहवतिःसामग्रहसूर्य

ग्रहवाग्रहमपञ्चग॥ ५ कविजगि
वागानुप्रवर्तयतु॥ नमः४सिद्धोएवति
यावदावर्तयतिनवन्मिसहजुनन
गम्यतेसकृदेवात्रिगनाकर्षयतिमा
नयतिःकुधवेगसाड्याठनःविद्ध
षण्णसकृन्वकृत्तः००स्वावसा०
कृष्णमंसकृत्तपत्रिजयाकोजकिप
वृद्धदीनांदर्जयतु॥ ५ममनांगारे
सकृत्तपतु॥ राहगुमनगत्रवात्रि
पवदाहंदजयगिमयूरपिकुकेस
कृत्तपुमाकाशजामयतु॥ पुनर
पंसमयतिःगर्कशसकृत्तफावउ
दिजकिपतुःचतुरंगंवरंदर्जयति

मयूत्रपिचुकं विप विरंगुमयः पुष्प
नयनं कृगं एव नीलिमहा मायावर्ज
वाताही नाम अत्र नीलिमाफ ॥ ० ॥
उं न मा एग वग ज्यार्थ गाव सु अत्रा
दिव्य रूपी सु रूपी च सोम्य रूपिवत्र पु
दाः व सु च ती व सु अत्री वः व सु अ
गा कलि वाता च त नी अत्र नी अत्रा
जत्र अत्र कि व सु त्रा पु स पात्र मिता
दवीः पु स गा वृद्धि वर्द्धनीः वि शोध
नी जि वा अत्रा अमं सर्व गुमा रुकाः
गत्र नी गात्र नी दवीः वि शोधाने ज्वत्र
ज्वत्रीः ए वि ता एग मा गा वः सर्वा ए
त्रा ए वि नीः इ अत्रा गु त नी लिमा

उगा उगु वरा कु मा दान पात्र मिता द
वीः वर्द्धनी दिव्य रूपी नीः निधनी स
र्व मांग त्या कि लि ले अत्रा य ग सु राः
दह नी मात्र नी च नी ज व नी सर्व मा रु
पुकाः कृगं गं गु म नी लि माः को मा
नी वि ज्वत्र वि नी ॥ वी र्य पात्र मिता द
वीः अत्र दान दत्रा च नीः गा व सी उ ग
रूपी व मृद्धि सिद्धि वत्र पु दा दान पु
च म हा एग गा अत्रा अत्रा वि कु मा
अत्रा द कं हि गा वि शोधः एग मा गात्र नी
सु राः अत्रा मिता मिता द वी अत्रा
नी अत्रा अत्रा नी य अत्री पत्र अ
नी व य गा त्र न मा स नीः अत्रा रूपी म
हा ग जा हे म वर्द्ध पु ल क नीः वि ना म

सिधनादवीः पुहापुसक धनली।
निधनक हमात्रुहाः धन्या गात्रध
नपुयाः पुं धन उ क महाप्रादीः दिवा
हमल हासिलीः माप्री सर्वकुशांना
नलधनपु अत्र उत्रिः जुन्यताएव
नोदवीः लालाएव विवर्जिताः वेल
यकि विनयावः सविती कुमकुंड
नीः हिनिनी सर्वमात्राधः सकृपा
गात्रा श्रीः ब्राह्मणी वेदमात्राव
पुं कृताय धेवाजिनीः सत्रस्वलि
विष्णुमात्राः वउवृक्ष विहात्रिणी
गात्रा मणिमहा रंम्याः वहीली धर्म
धनिलीः कर्म धर्म धर्म धर्म धर्म

विष्णुकोलाग्रमकुलीः वाधनी स
र्वमात्रा नो धर्मगकुण शर्मनीः धम
नीदिभुक्ति संवत्ताः लक्ष्मीदयला
विनीः सर्वार्थमाधनी लडाः लुक्तामि
गवि कुमाः दर्भनी वृद्धमात्रा नोः नष्ट
मार्गवृद्धमनीः बागी अत्री महाधम कि
लाप्री धर्मगी धनं ददाः लुक्तां धनली
सिधः धर्मि लीयात्रमी अत्रीः मनाह
लो महाकाकि उरगात्रिचद अत्रीः
सार्धवाह कृपावृष्टिः सर्वता धर्मगात्र
कीः नमस्ते हस्त महादवीः सर्वसुखाध
दायनीः नमोस्तु दिव्यतृयीवः वसुध
मानमास्तु पः लक्ष्मी नं गार्ध नमस्तु
कोल युवपदि मां प्राप्तामिति यमसिद्धि

मिषिगं सुसन्नात्रयं यदहं न क
नं पापं ज्यनं गयी सुदात्रुनः गस
वडु पायिवाणिः सत्रमदि एड
कः ज्यवागित समं स सजा
मि सत्रा एवमः प्रिय ज्यदयवा के
ज्यत्रय वा नु प्रिय द जनेः विपुत्र
प्रियकृतेषुः ज्यदय मृप जायमः
ज्यनं रमि ज्यत्रपाकं प ज्यत्पा
कं सुखा व निः नि ज्यवसु
रा ज्यसा सी कुत्र गग कं वृद्ध ग
मिगं समाक ॥ ७ ॥

१३ नमः ४७ वसुधैव कुटुम्बकम्
धर्मजीवसुधैव कुटुम्बकम्
यनसाधनं ४७ सुखाया कुटीगा
यः धर्मिगाया उ सदा देहि
नाय य्यवाफायः प्रवर्द्धिगा
नूमादिगा ४७ ज्यन्या खा वि
सुत्रनेवः गीपु का जय न
जन्म ॥ जन्मनी सर्ववृक्षानां
वसुधैव कुटुम्बकम्
विद्यविनासा नमः सयात्रि
कुनिसुडनीः सुसुम्यां स
वृद्धानां महाविद्यावसु

प्रियाः दत्तिडव्याधिः शका
एतेः नृपतनिकदाचनः
अचिकिगानिडव्यानिः प्रा
पूवन्निनसंशयः ॥ यनवि
ज्ञातमात्रेन सर्वसंपत्ति
मापूयात ॥ नविहंधनि
दयायाः व्याधिना व्याधि
गाहयेत ॥ अपुगुलयेत
पूयः धने धन्यादिकं म
हत ॥ महाधन्यामहा
गंधसपत्नः पत्रिउधद

यः ॥ किमनुवहनाकून
इष्टाप्रपद्वन्मनीः यः
धकविधिनायनयुगं वा
पयधमत्रमग ॥ कृष्टुल
उपदमास्यः एतियाति
धिसाहनं यप ० वस्
धमत्रिः ॥ स्वाहातपनमा
यतः धनत्रलादिडव्य
वः लखननागसंशयः ॥
कुठिनी धमनीरुलंव
सुधमत्रादया ॥ ७४ ॥

१३ नमः श्रीवज्रवाताहीये
नमः॥ ॥ वज्रवाताही
महाविद्या गन्तुदिधना
क कर्म पूजा विधि महं
कतिष्ठः वज्रवाताही
यनमः॥ ॐ स्वस्ति वा
ताही देवी महाविद्या
मालामन्त्रः श्रीवज्रवा
ताही देवी वज्रवाताही
महाविद्या स्वरूपिनिः
श्रीकृष्ण तनीवीर्जतत्वं

प्रयवापिनीः शुभ्रः
शक्तिः समस्तकलपूत्रा
र्थः सिद्धिर्धनपवित्रि
यागः न्यासं व पूर्वकं कृ
त्वा न वगदनकनं
श्रीवज्रवाताहीरक्ता
पदकाग्रमानमः सान्नि
कं ताज संवेव गामसंति
गन्तुसकं गामसंति
समनः कृत्या रतगदाप
हं॥ ॥ ॐ न्यासः॥

ॐ उं ह सकृदयत्नमः॥
ताहाय॥ ॥ ॐ उं कृ
नामिकाय स्वाहा॥ ॐ
लानिया॥ ॥ ॐ उं न न व
मध्यमाय वाषट्॥ गिल
सधिया॥ ॥ ॐ उं पत्रग
न्याय चं॥ कपालसधि
य॥ ॐ उं उं ॐ उं कृदय व व
त॥ मिखास॥ ॥ ॐ उं कृ
त्रगनाय ॐ रु॥ सर्वा॥
ॐ उं उं उं उं उं हं सं नू
नमः॥

ॐ उं कृ म मित्रस्य स्वाहा॥
कपालसधिया॥ ॥ ॐ उं
नववाषट्॥ गिलस॥ ॥
ॐ उं यत्नके उ वाय हं॥ ॐ
सपनधिया॥ ॥ ॐ उं न
कृदयरु॥ सर्वा॥ त्वत्ती
ॐ नृध्वनय सर्वविदव
दाद्रपात्रम्॥ ध्यानं तस्य
पुवकामिः सर्वकामपुसा
धनं॥ ॥ ॐ उं रु॥ कृ
लियं रु॥ स्वाहा॥ ॥

विष्णवे॥
ॐ नमः॥ ॐ श्री वागही पा
मं कृष्णपत्राणां च त्रक
कायं च विदुः कं ६ को ला
स्या वाहयादवी ध्यानपू
ष्यं नमस्तुते॥ ॥ म म
यपान॥ ॐ ह्रीं श्रीं हं ह का
लागिनी कृष्णविष्णु ना
म यं हं रुद्र॥ ॥ धूप॥
ॐ ह वागही त्रगला कं २
ज्वगत्र २ श्री घं हं रुद्र
स्या हा॥ ॥ ध्यान॥ ॐ वा

गाही त्रका म्व हं मवदना
नृक म्वाति नृग वउ ह
जा॥ मूलरजाणां विदुपा
ग्रं व ज्वपत्र सुजाणां स्व
अरुद्र क धात्र जी॥ मं ही
षवाहनी॥ ॥ म रु॥ ॐ
हं रुद्र वागही ये हं रुद्र
स्या हा॥ ॥ ॐ हं उल्का ये हं
हं रुद्र स्या हा॥ ॥ पा या
दिपूष्यं न्याम॥ ॐ श्री म त्र
श्री वागही देवी त्रका त्र

कायपाद्यावमनार्घ्यप्र
तिकृत्वाहा॥ उ० उल्काय
वमनकमत्रापपाद्याव
मनार्घ्यप्रतिकृत्वाहा॥
स्वानवाय॥ उ० रु० रु० दवा
राहीनम० स्वाहा॥ उ० क
पालते लवायनम० स्वा
हा॥ उ० बी० उ० यच० उ० नम०
स्वाहा॥ उ० यम० देवगा
यनम० स्वाहा॥ उ० कृ० ति
कनागत्राज्ञायनम०

स्वाहा॥ उ० न० काम्यत्रकृत्वा
प्रायनम० स्वाहा॥ उ० मी
ननाथ० यनम० स्वाहा॥
उ० वृ० वृ० कायनम० स्वा
हा॥ उ० ग० क० र० स० म० नाय
नम० स्वाहा॥ उ० उल्का० द
वगायनम० स्वाहा॥ ॥
व० उ० न॥ उ० व० उ० वा० रा० ही० य
त्रकृ० व० उ० न० नम० ॥ पू
जा० ला० स्वा० तु० ति० गा० तु॥ उ० वा
राही० म० हि० र्वा० तृ० टा॥ त्रकृ०

व
वल्गुतितायनाः मीमी
नां कुंभधराहस्त। वात्रा
हीवनमस्तुत॥ उं उल्का
लिकामहाल्काल्का। वा
मिनीमनुमातृकाः
सोत्रमातासोत्रेणार्थ
त्रयनित्यननित्यता॥
वति॥ उं ठकाहीच
नधात्रयधरात्री।
मीनां कुंभधरात्री। पु
निपुणं दं वति॥ ग

इं स्वस्वस्वाहिं वात्रा
हीरुं रुट् स्वाहा॥ ० ॥
अत्रमदलपित्र॥ वडन
वस्तु पुष्पनेवद्यादि॥ ॥
गाय॥ उं वात्राही धात्रका
प्रितककणीमहादगी
उष्ठाकलात्रगमीता। वा
त्रार्कत्रकावनी। कपाल
मालात्रनी। विचित्रपुष्प
अहिता। महामही वमा
गूढा। कलिता। तिसमप्र

ल०॥ मीनाकृष्णकलिका
 व० अ० हाताएत्र न र व
 नि० गिने गुं कलि तं देहं
 इष्ट गप्य नि यि ग्रहं ॥ २ ॥
 काम्यत्र द्यु स्थिता नि
 त्यं वृत्त वृद्ध नि समा
 ष्टयः दक्षिण पी ० स्थि
 तानि त्यं काल रूपी न
 मास्तु ते ॥ ॥ उ० मील
 काय महा ते उ० मदिषा
 पत्रि स स्थितं यम दग्ध

कता धर्म्यं श्री कृष्णार्जुन
नमाम्यहम् ॥ ॐ स्वस्ति
वर्त्मन् महातेजः ॥ ॐ नमः
श्री गुरुभ्यामाचार्यकाय ॥ उव
क्रायनी पीतवर्णीया ॥
मारुग्वती स्वत वर्त्तिका
की मातीत्रक सन्निरा
वेष्टुवी स्पाम वर्त्तीयनम
वाताहीत्रक वर्त्तिका ॐ
नायनी कुंकुम वर्त्तिका
चामूपाधुसन्निराच

महालक्ष्मी वरक वरनि
का॥ सिंचिनि स्वतयनू
वः व्याधिनीपी तयनूकं
कृष्णवर्णकृष्णपालदेव
देवी गले ध्वजो॥ नाना
रत्नमणिमालाध्वजः नाना
त्रिलोकमणिमालाध्वजः
दीर्घास्तिता देवाः नमा
मिदेवतागले ॥ नमः
~~ममकविनामवागुरु~~
ध्वजनि

यत्र पूजितं सर्वं पुकि
सूक्ति पुदापयन॥ सा
प्रपा ० उर्वनिर्णयः शुद्धा
यूक्तनयनसा॥ तेनरा
जनलोकस्पृष्टकृत्तुदे
वतागले ॥ नानाध्वज
विनामवागुरुध्वजनि
सदा रवेता॥ उर्वकं च
उतं पंयं ध्वजः मातृकावी
उदेवतां॥ सेवापूजा महं
निर्णयः मातृकाध्वज नमा

महं॥ जृष्टकुरुंति गाद
यी॥ जृष्टवृद्धनिवाणि
नी॥ जृष्टते लव संयुक्तं
मातृकाष्टो नमा महं॥
उं उल्कास्त्रिका म हास्त्रिका
लाना सिनी म तु मातृ
का ४ सोत्रसा ता सोत्रला
प्यत्रिषा निस्य न निस्य
गा ॥ उं जृष्टिगां ग रं ग व
वेवः व अर्थक्रिह ते ल
वः उल्कास्त्रिका लव वेवः क

पालिटी वनसुधा॥ सं
हाल व व जृष्ट वः ते लवा
४ नमस्तुते॥ स्वस्थान
स्वाचिका त्रा ४ वः स्व स्व
रूपी स्ववीर्यका ४ स्व स्व
कार्यं वृवर्तने॥ दिवा
करी क र मिषा ॥ द ४ दि
दृष्टकुरुंति पाला ४ वः दृष्टा ४ वे
व व तु दृष्टा॥ पंथा ४ दृष्ट
पालं वः दृष्ट पालं नमा
स्तुते॥ नाथ नाथ महा

नाथः आदिनाथ महात्म
नाः शीनाथ सिद्धिनाथ
वः मीननाथ नमोस्तुते
कृष्णनाथ वषी ० ऊँ दी
पनाथ महात्मना पुन
नाथ वरतरे वः वक्रनाथ
नमोस्तुते ननुनाथ न
वनाथ कृष्णनाथ
मूलमं सफाविंशति
पंचांगः शीनाथीति न
मोस्तुते ॥ सर्वेषां नाथ

सिद्धानां सत्कानां वक्र
तात्पर्यं यागसंयतं
वीरं गत्सर्ववनमोस्तुते
७ का कालगिकालयं य
प ० किनतास्तु ५ वठि
त्यसर्वसागं प्रप्रा
तिष्ठियमूलमं ॥ नाथ
यत्तु ५ कविनालि ना
थयेदिद्यदेवगा नाथ
यत्तु कलहं नाथ

नामयद्दुष्टवर्द्धनं॥
नामयद्देवदात्रिडं॥ना
मयडिपमूढमं॥ना
मयदग्नियोगादि॥ना
मयसर्वविघ्नतः॥ना
मयसर्वविषधात्रं॥ना
मयदहिरात्रनी॥ना
मयक्षौद्रधकालि॥ना
मयसर्ववीरकं॥आ
युतामो गधमं गवयः॥
नमः नमः विवर्द्धनं॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थं
यत्नमो गाय मूढमं
मृद्धि सिद्धिं श्रियं लक्ष्मीं
विद्यां तन्मूढमं
प्राप्तां श्रियं सत्यं॥ यः
प० लं शु लं सुवं॥ • ॥
ॐ नमो भूतमातृका
श्रीपद्मेश्वरपद्मेश्वर
श्रीदेवदेवी सुवर्णां सु
माफा॥ • ॥ दानपतिग

गमरुगस्य न शीवजावा
पममगुदेवताउनामा
याः शीपत्रम्यव्वतीद
द्विदिगलारुधविता
जितशीवजावाहाप
त्रम्यव्वतीरकालक
सिद्धिस्तुष्टुसन्ने
वातातुष्टु॥ शीममदे
वताउनामायाः दाता
सुतीउनसहितसु
सर्वीतिस्तुष्टुमन्त्रं॥

ॐ हउन्मनिवापुर्वजन्म
निवाः उन्मजन्माकृतेषु
सकृत्तजन्मापाजित
माहापातकादिउपपा
तकद्वयत्वं॥ गउल्लत
ॐ हउन्मः ममशीदेवता
उनामायाः ग्रहणमवला
तउन्मस्तुल्लग्नआदिपा
दिनवगुहदमत्रिस्तु
मन्त्रं॥ जितिदमयां

उत्कादयमत्रिष्टदा सः उ
 संवाचिकस्तु कृतानां प
 का पं। धनादिभ्यदा ता
 दिका नां विजागं। सा
 गुमठयिवादं। सहदेव
 वेत॥ ७॥ तदा षनिवात्र
 नमर्थः। ममशा देवताज
 नाम्ना या मना कामना
 पत्रिपूर्वार्थी पुतापा
 यावृद्धर्थः। मम

मप्रतिनां प्रीति सुख
 रुल प्राप्ति काम नार्थः
 तत्पि न स्त्री न दण्डनि
 रुल प्राप्ति तत्पि
 रुल सुखि प्राप्ति
 ॐ रुल मन्त्रि गायत्रा
 गायत्र सुखेण व्यस
 फ विदि धन धन्यादि
 ॐ रुल व्यस रुल प्राप्ति
 काम नार्थः सकल न काल

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines, though it is heavily faded and difficult to decipher. Some legible fragments include:

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

सिद्धि मन्त्र सिद्धि वाक्कसि
 द्विक्रिया कर्मसि सकल
 सिद्धि उपपन्न मन्त्राध
 न न पावनं सकल
 सिद्धि रूपा फलार्थि उध
 साग मनवां कृतार्थ सं
 प्राप्ति कामनार्थि ता उ
 मान्य लोक मान्य ता उ स
 रामध सकल वाक्कसि
 धार्थि सकल श्रुति वा

नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ राउ
मंडलं वागमयं यश
पिसंगम्य सुतुपनाग
राजा विराजित राज
निधिका नराक्षरा
रथसुखे सुख्यरुलज
फिकामलनः स्नान
दानसंपूर्णार्थपूना
पिः श्रीवज्रवागहिदे
वीर्यसुखनः श्रीवज्र

ॐ नमः ॥ १५९
वागाही मृतमनु उल्का
दग्धमि सुग्धमि कः म
रुद्रुग्धमि तजवधमन
~~सुक्ते मृतु~~ जपतपम
कीधमनया वरुग्धमि
मातृका सुवगागंदि सु
कलग्धमि कठासिधार्थ
शुद्धगन्धपूष्यधूपदीप
नेवद्यादिं स पूजा संपूर्ण
तत्सर्वविधिपत्रपूना
नमस्तु ॥ नमः नमि

मम गी दयता जय लवही
नं लकि ही नं कृया हि नं।
प्रसिद्ध गी पत्र मंगवती।
नञा ना मिदु म स्वा ग
यमा रु स म प या ड
स कृप या ॥ ॥ सत्य
त १०२४ मिति। ज्वि
क ज व व दि। द्वि गि या
मं ग त या ल। थ कू कं
नि स्यां ता ज ग थ स।

मा ७ कू या डी। श्री वजवा
गा ही देवी या के स्व वा या
ना इ ल। श्री दे वता ज या
उल्का द ग म लग य रु या।
ग म व ते। ज्व म लाने।
ग नि ग्व ल द ग म लग य
इ या ड। थ ग म क्रि या
य का त न स। थ पूजा वि
धन वा ता ही देवी या ग
म का दिं पा ० द य का त या ५

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ध्यातुं ॥ सुपता गायकः अनिया
नाडा मिसाडाय

ॐ वल्लभकृष्णकृष्ण स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
लिखः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
धनुत्र विजय गुरु नमः
वालं की गुरु संशु कंधूय
साधनः सर्व साह प्रार्थिः
लो

ग्रीवमु

नकुचमु

कूट

शंख

कण्ठ

गर्भा

प्लवा

पुच्छ

मूला

ग्रीवमु नकुचमु कूट शंख कण्ठ गर्भा प्लवा पुच्छ मूला



ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ



129